GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

Geography of India [B.A. II (Hon/Sub...).]

Topic - Physiography [भू-आकृतिक/भौतिक्षेत्रीय, भौतिक/आकृतिक प्रदेश] <1>

भारत एक विशाल देश है। जिसका धरातल अत्यधिक विविधता लिये हुआ है। इसमें कहीं ऊँचे गगन-चुम्बी पर्वत पाये जाते हैं तो कहीं विस्तृत मैदान और कहीं कठोर भूमि वाले पठार। किसी भागों में उड़ता बालू के टीले पाये जाते हैं तो कहीं सघन वन। देश के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 10.7% भाग पर्वतीय (जो समुद्र के धरातल से 2,135 मीटर से अधिक ऊँचे हैं), 18.6% भाग पहाड़ी (जो समुद्र के धरातल से 2,135 मीटर तक ऊँची हैं), 27.7% पठारी (जो 305 से 915 मीटर ऊँचे हैं) और 43% भू-भाग मैदानी है।

Note - ~~सिर्फ जानने के लिए, लिखने की जरूरत नहीं है~~ : [उत्तर (North):- उत्तर में गगनचुम्बी हिमाच्छादित शिखर - विशाल घाटी हिमनद (Valley glacier) गहरे खड़ी लम्बाकार घाटियाँ, अनेक जल प्रपातों, सघन वनस्पति एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं से सम्पन्न हिमालय की ऊँची श्रेणियाँ स्थित हैं।

दक्षिण (South):- दक्षिण में गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित विशाल समतल मैदान विस्तृत है। नदी घाटियाँ, नदी वप्र (Bluff) विसर्प, गोखुर झील, नदी मार्ग परिवर्तन आदि जलोढ़ मैदान की प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताएं हैं।

पश्चिम (West):- पश्चिम में स्थित राजस्थान का मैदान वनस्पति विहीन, बालू का स्तूपों से एक रेतीला मरुस्थल है जिसमें अनेक अल्पकालिक सरिताएं (Ephemeral streams) प्रवाहित होती हैं। इनमें से अधिकांश मरुस्थल में ही विलुप्त हो जाती हैं।

पूर्व में (East):- पूर्व एवं पश्चिम में समुद्र तटीय अवस्थित हैं। इन तटवर्ती मैदानों में अनेक झीलें पायी जाती हैं। तट से दूर अरब सागर (Arabic Sea) एवं बंगाल की खाड़ी (Bay of Bengal) में क्रमशः लक्षद्वीप तथा अण्डमान निकोबार द्वीप-समूह स्थित है जिनकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न प्रकार से हुई है।

अतः - आप सभी लोग भौतिक भूगोल में पढ़ चुके हैं कि पृथ्वी की अनुमानित आयु 46 करोड़ वर्ष है। पृथ्वी पर अन्तर्जात (Endogenetic), बहिर्जात (Exogenetic) बलों से अनेक परिवर्तन होते हैं। पृथ्वी की विवर्तनिक हलचलों (Plate Tectonics.) प्लेट अलग-अलग हुए]।

भूवैज्ञानिक संरचना के शैल समूह की भिन्नता के आधार पर भारत को प्रमुख चार भागों विभाजित किया जाता है।

Next Page.....(2)

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

I – उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
II – दक्षिण का पठार
III – उपर्युक्त दोनों के मध्य का विशाल मैदान
IV – तटवर्ती मैदान एवं द्वीप समूह

I. उत्तर का पर्वतीय प्रदेश (Northern Mountain Region.) → उत्तरी पहाड़ी प्रदेशों के अन्तर्गत हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा पर पश्चिम से पूरब की ओर 2,400 किलोमीटर की लम्बाई में वृहद चाप (Arc) के आकार में फैले हैं। यह पश्चिम में बलूचिस्तान से आरम्भ होकर उत्तर में नेपाल और तिब्बत के मध्य होता हुआ पूरब में बर्मा की अराकानयोमा पर्वत श्रेणियों तक फैले हैं। इनकी चौड़ाई 150 से 400 किलोमीटर तथा ऊँचाई 6,000 मीटर है। ये लगभग 5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हैं। ये पर्वत उस पर्वतप्रणाली का ही एक [जिसे पामीर की गाँठ (Pamir Knot) कहते हैं।] भाग हैं जो मध्य एशिया से मध्य यूरोप तक फैली है। पश्चिमी भाग में इनकी तीन श्रेणियाँ फैली हुई हैं। लद्दाख-जास्कर श्रेणी, पंगी श्रेणी और पीर पंजाल श्रेणी। पूर्वी भाग में (हिमालय के उत्तर-पश्चिम में एवं कश्मीर के पूरब में) काराकोरम श्रेणी है, जो चीन तक चली जाती है। इन सभी पर्वतों ने भारत को शेष एशिया से पृथक कर दिया है। [MAP K1]

भौतिकाकृतिक विभाग : MAP

हिमालय का भौगोलिक वर्गीकरण Geographical Classification of Himalaya

हिमालय पर्वत कई श्रेणियों से मिलकर बने हैं, जो एक-दूसरे के समानान्तर फैली हुई हैं। हिमालय में चार श्रेणियाँ सम्मिलित हैं।

हिमालय का भौगोलिक वर्गीकरण

1. महान या आन्तरिक हिमालय (Greater or Inner Himalaya Zone)
2. लघु हिमालय या हिमाचल श्रेणी (Lesser Himalayan Zone or Himalachal)
3. उप-हिमालय या शिवालिक श्रेणी (Sub-Himalayan Foothill Zone or the Siwaliks).
4. ट्रान्स हिमालय श्रेणी (Trans or Tibet-Himalayan Zone).

Next Page ③

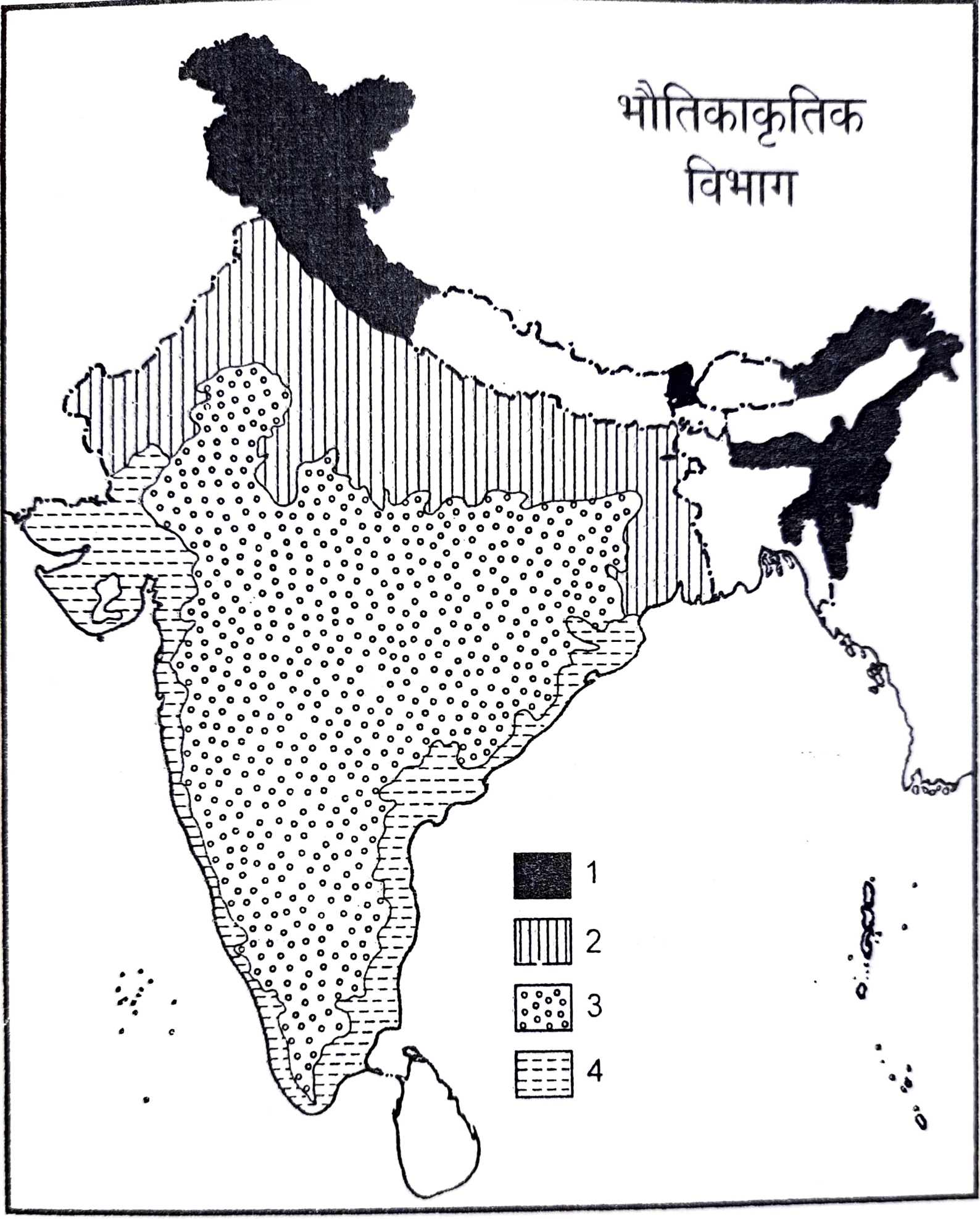

चित्र 1. भारत के भौतिकाकृतिक विभाग। (i) उत्तरी पर्वतीय प्रदेश, (ii) सतलज-गंगा ब्रह्मपुत्र का मैदान, (iii) प्रायद्वीप पठार, (iv) तटीय मैदान एवं द्वीप समूह।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

(1) महान या आन्तरिक हिमालय (Greater or Inner Himalaya Zone) →

यह सबसे उत्तर की श्रेणी है। जिसे हिमाद्रि, महान हिमालय या मुख्य हिमालय के नाम से जाना जाता है। यह सिन्धु के मोड़ से ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक 2400 किलोमीटर की लम्बाई में एक चापाकार आकृति में फैले हुए हैं। इसकी चौड़ाई 25 किलोमीटर और औसत ऊँचाई 6,000 मीटर है। इस पर्वत श्रेणी में 40 ऐसी ज्ञात चोटियाँ हैं। जिनकी ऊँचाई 7000 मीटर से अधिक है और लगभग 213 ऐसी अज्ञात चोटियाँ हैं। जिनकी ऊँचाई 6,000 मीटर से अधिक है हिमालय की सबसे ऊँची चोटियाँ इसी भाग में पायी जाती हैं। मुख्य चोटियाँ ये हैं। — माउण्ट एवरेस्ट या गौरी-शंकर (8,848 मीटर), नन्दादेवी (7,818 मी॰) गोसाईंथान (8,013 मीटर), कंचनजंगा (8,598 मीटर), माकालू (8,481 मी॰), अन्नपूर्णा (8,078 मीटर) मनासालू (8,156 मी॰) दरामोश (7,397 मी॰), और धौलागिरि (8,172 मीटर)। ये सभी चोटियाँ प्रायः वर्षभर बर्फ से ढकी रहती हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर जाकर श्रेणी के उत्तर और दक्षिण में देवसाई और दियोसा के ऊँचे मैदान मिलते हैं। इस श्रेणी का ढाल सिन्धु और सांपो की संकरी घाटियों की ओर साधारण किन्तु दक्षिण में तीव्र पाया जाता है। यहाँ चौड़ी घाटियाँ कम मिलती हैं। इस पर्वतीय भाग में सिन्धु, सतलज, कोसी और दिहांग नदियों की घाटियाँ बड़ी संकरी हैं। इस श्रेणी के मध्यवर्ती भाग से गंगा, यमुना और उनकी सहायक नदियाँ निकलती हैं। हिमालय पर्वत के गर्भ भाग (Core) में ग्रेनाइट, नीस और शिस्ट शिलाओं का आधिक्य है, जो प्राचीन शैलें हैं। पार्श्व भागों में परिवर्तित एवं अवसादी शैलें मिलती हैं।

MAP-(2) [हिमालय की भूगर्भिक एवं पर्वत श्रृंखलाएँ]

(2) लघु हिमालय या हिमाचल श्रेणी (Lesser Himalayan Zone or Himachal)-

यह श्रेणी महान हिमालय के दक्षिण में इसी के समानान्तर फैली हुई है। यह 80 से 100 किलोमीटर चौड़ी है। इस श्रेणी की औसत ऊँचाई 1,828 से 3,000 मीटर और अधिकतम ~~ऊँचाई~~ 4,500 मीटर है। यहाँ नदियाँ 1,000 मीटर की गहराई पर बहती हैं। शीत ऋतु में 3-4 महीने हिम गिरता है किन्तु ग्रीष्म ऋतु में ये भाग स्वास्थ्यवर्द्धक एवं सुहावनी जलवायु वाले रहते हैं। इसमें कई छोटी-2 श्रेणियाँ हैं, जिनकी अनेक भुजाएँ (Spurs) हैं। ऐसी श्रेणियों में धौलाधर, पीर पंजाल, महाभारत लेख, चुरिया और मसूरी मुख्य हैं। भारत के प्रसिद्ध स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान, शिमला, मसूरी, नैनीताल, डलहौसी, दार्जिलिंग आदि इसी श्रेणी के निचले भाग में स्थित हैं। इस श्रेणी में स्लेट, चूना, पत्थर, ~~[illegible]~~ क्वार्टज, और अन्य शिलाओं की अधिकता पायी जाती है।

Next Page --- (4)

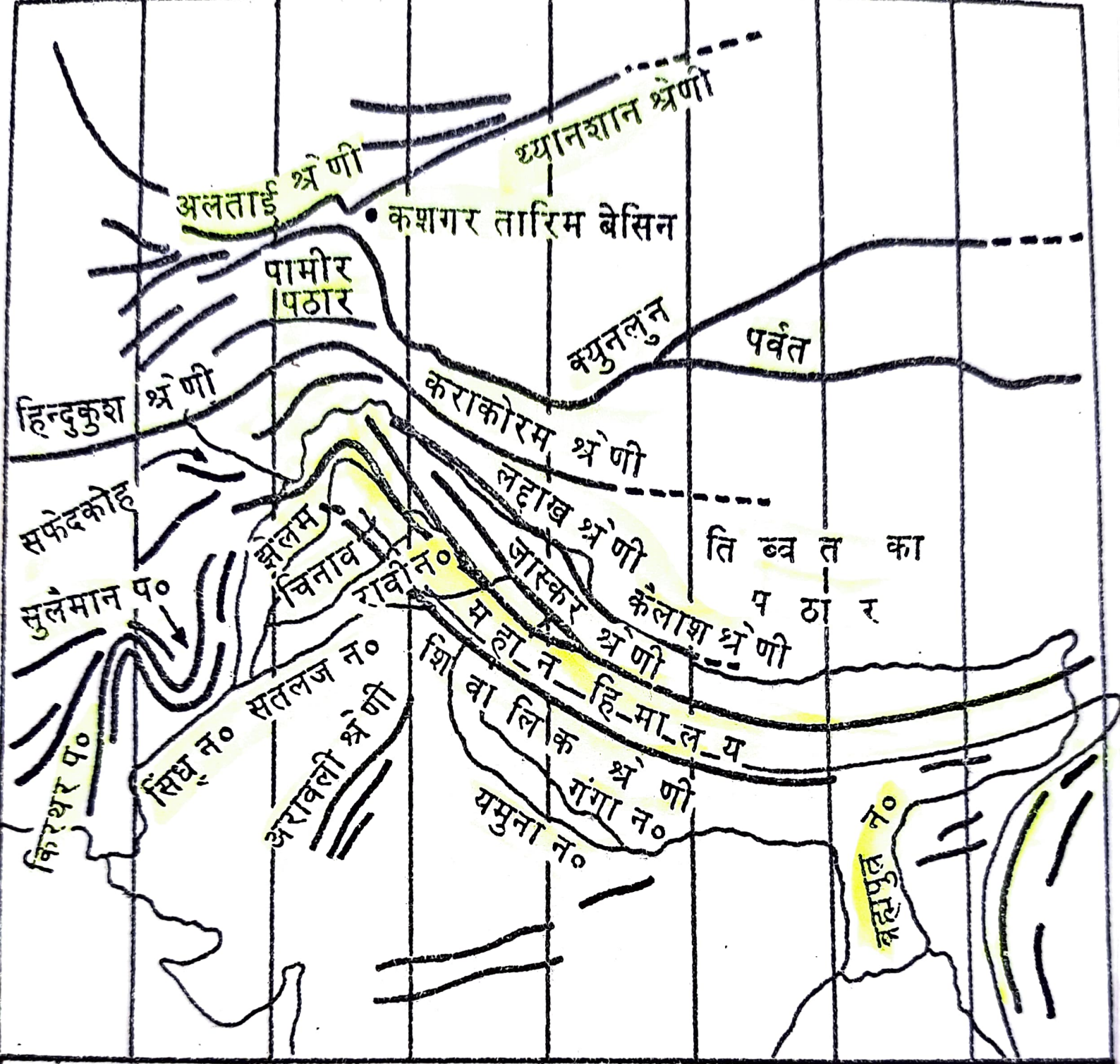

हिमालय की भूसन्नति एवं पर्वत शृंखलाएँ

(बुर्राड तथा मुश्केतोव के अनुसार)

चित्र 2.

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

इसमें शिलाजुल या जीवावशेष (fossils) बिल्कुल नहीं मिलते। इस भाग में कोणधारी वन मिलते हैं और ढालों पर छोटे 2 घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हें कश्मीर में मर्ग (जैसे- गुलमर्ग, सोनमर्ग) और उत्तराखण्ड में बुग्याल और पयार कहते हैं। मध्यवर्ती भाग में हरी-हरी घाटियों को द्वार एवं दून के नाम से पुकारते हैं।

MAP-3 [उत्तर पश्चिम हिमालय की औतिकी रचना]

(3) उप हिमालय या शिवालिक श्रेणी [Sub Himalayan Foothill Zone or the Siwaliks] यह श्रेणी उपर्युक्त दोनों श्रेणियों के दक्षिण में फैली है। इन्हें बाह्य हिमालय (Outer Himalayan) भी कहते हैं। यह श्रेणी पोटवार बेसिन के दक्षिण से प्रारंभ होकर पूरब में कोसी नदी तक फैली है। उत्तर-पश्चिम से पूरब में यह लगभग 2,000 Km लम्बी एवं 40 से 50 Km. चौड़ी है। इस श्रेणी की औसत ऊँचाई 1,200 मीटर के आसपास है। पूरब की ओर तिस्ता और रायडाक नदियों के निकट यह लुप्त हो जाती है। यह हिमालय का सबसे नवीन भाग है। विभिन्न भागों में इसके विभिन्न नाम हैं; जैसे- गोरखपुर के पास डुंडवा, पूरब की ओर चुरिया और मुरिया आदि। इसको लघु हिमालय से अलग करने वाली घाटियों को पश्चिम में दून (Doon) और पूरब में द्वार (Duars) कहते हैं। देहरादून, हरिद्वार ऐसे ही मैदान हैं। इन घाटियों में गहन खेती की जाती है तथा ये घनी बसी हैं। यहाँ भूस्खलन की घटना भी होती रहती है। इस श्रेणी का सम्पूर्ण पर्वतपदीय भाग (जिसमें तराई प्रदेश सम्मिलित है) दलदली और वन-आच्छादित है।

(4) ट्रान्स हिमालय श्रेणी (Trans or Tibet-Himalayan Zone) → यह महान हिमालय के पीछे तिब्बत के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके मध्य में यह 225 Km तथा पूरब और पश्चिम की ओर किनारों पर 40 Km चौड़ी है। इसकी लम्बाई 960 Km है। यह 4,100 से 5,700 मीटर ऊँची है। यह श्रेणी बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों तथा उत्तर की ओर भूमि से घिरी हुई झीलों में गिरने वाली नदियों के बीच जल-विभाजक का कार्य करती है। इस श्रेणी में कई दर्रे हैं, जिनकी औसत ऊँचाई 3,200 मीटर है।

MAP ③ ऐनसांग

Next-Page-5

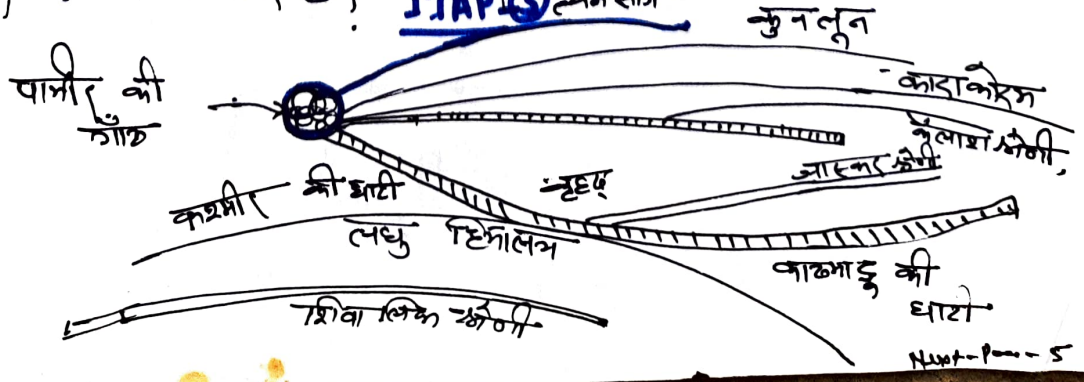

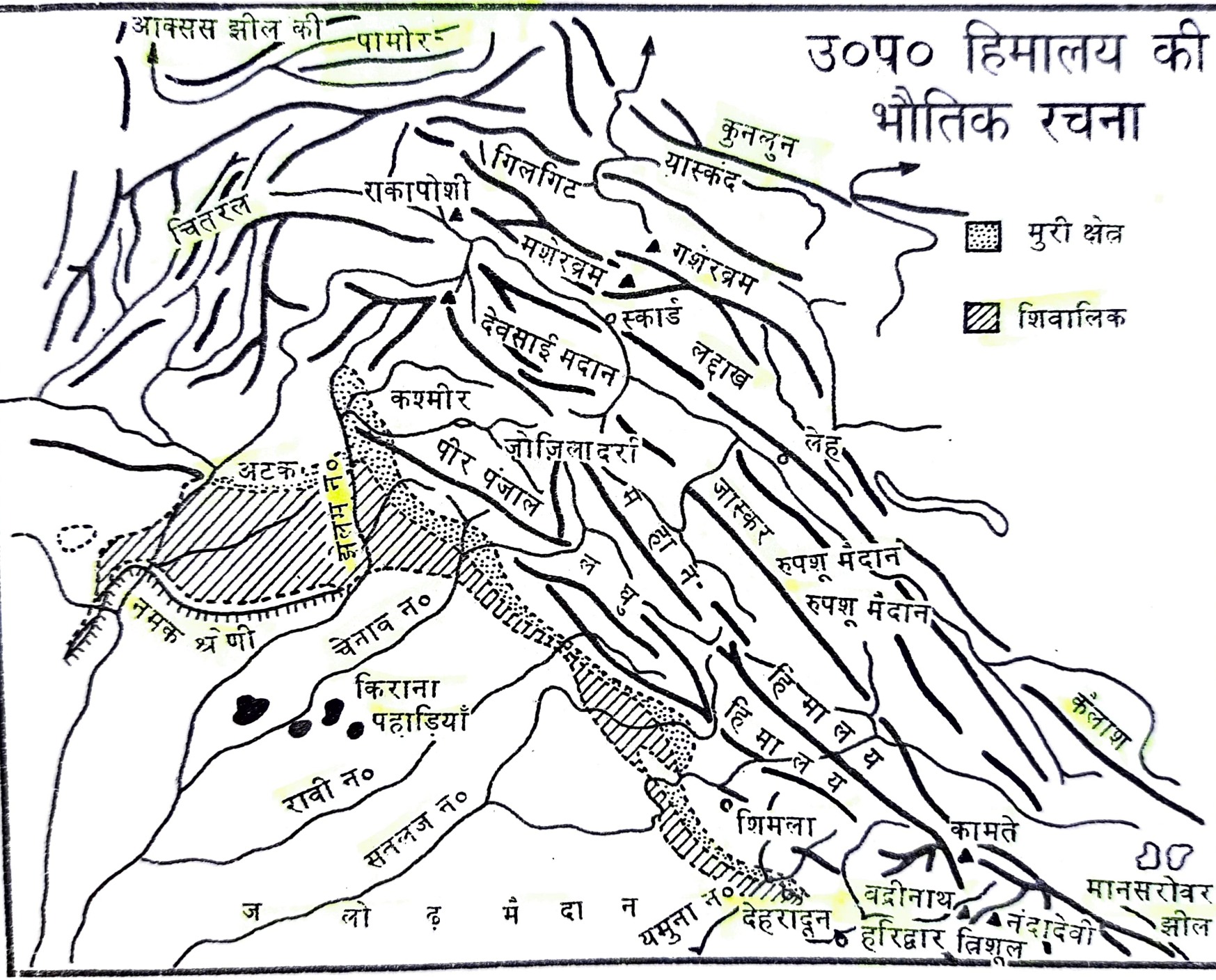

चित्र 3. उत्तरी पश्चिमी हिमालय की भौतिक रचना।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

III - दक्षिण का पठार (Plateau)..

यह भारत का ही नहीं, विश्व का प्राचीनतम पठार है। यह आर्कियन काल के चट्टान से बना है तथा इसका कोई भी भाग समुद्र के नीचे नहीं डूबा है। (पूर्वी घाट पर्वत के पास आंशिक रूप से स्थानीय निमज्जन के प्रमाण मिले हैं) विवर्तनिकी दृष्टि से शांत क्षेत्र होने के कारण यहाँ भूकम्प आने की सम्भावना काफी कम है; हालाँकि कोयना और लातूर में आए भूकम्पों ने इस पर प्रश्न-चिह्न लगाया है। अरावली, कैमूर, राजमहल एवं शिलांग की पहाड़ियाँ प्रायद्वीपीय पठार की उत्तरी सीमा बनाती है। इसका दक्षिणी छोर कन्याकुमारी है। जो हिन्द महासागर को छूती है। इसकी पूर्वी सीमा पर तटीय मैदान से थोड़ा पश्चिम में पूर्वी घाट पर्वत है। यह अवशिष्ट पर्वत के रूप में है, जो लगातार न होकर बीच-बीच में टूटा हुआ है। यह एक ब्लॉक पर्वत के रूप में है। अफ्रीका से भारत के अलग होने के क्रम में अरब सागर के रूप में भ्रंश घाटी का निर्माण हुआ है और भ्रंश कगार के रूप में पश्चिमी घाट पर्वत बच गया है। प्रायद्वीपीय भारत के पश्चिमी तट की तीव्र ढाल उस भ्रंश को द्योतित करती है।

Note* – समझने के लिए,,

[**कोयना** – कोयना (महाराष्ट्र) - 11-12-1967, 6.5 भूकम्प
192 - मौत, 2063 - आहत हुए, 10,000 बेघर (लगभग).

लातूर – लातूर (महाराष्ट्र) - 30.09.1993 - 6.3 भूकम्प
11,000 मौत हुए थे।]

प्रायद्वीपीय भारत के पर्वतों को बाँटकर निम्न रूप से अध्ययन किया जा सकता है

क- अरावली, **ख**: पश्चिमी घाट पर्वत (सह्याद्रि श्रेणी)
ग- पूर्वी घाट पर्वत

⟨क⟩ अरावली → अरावली पर्वत संसार के सबसे पुराने पर्वतों में गिने जाते हैं। यह उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम में दिल्ली से पालनपुर तक लगभग 800 Km की लम्बाई में फैले हुए हैं। इनकी सबसे ऊँची चोटी दक्षिण के आबू पहाड़ी में गुरुशिखर 1722 मीटर ऊँची है। जो

⟨ख⟩ पूर्वी घाट पर्वत (सह्याद्रि श्रेणी) → पश्चिमी घाट पर्वत हिमालय के बाद भारत की दूसरी सबसे लम्बी पर्वत श्रेणी है इसकी लम्बाई करीब 1500 Km है। पश्चिमी घाट पर्वत का फैलाव ताप्ती नदी घाटी से नीलगिरि पहाड़ी तक है। (पश्चिमी घाट पर्वत को हम सह्याद्रि के नाम से भी जाना जाता है) जो हम दो भागों में बाँटते हैं। उत्तरी सह्याद्रि और दक्षिणी सह्याद्रि। दोनों की विभाजक रेखा 16° उत्तरी अक्षांश रेखा है जो गोवा से गुजरती है।

→ उत्तरी सह्याद्रि के ऊपरी सतह पर लावा का निक्षेप है। उत्तरी सह्याद्रि का सर्वोच्च शिखर "कालसुबाई,, (1646 मीटर) है।

Next - 06.

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

→ दक्षिणी सह्याद्रि का निर्माण मुख्यतः आर्कियन चट्टान से हुआ है। दक्षिणी सह्याद्रि का सर्वोच्च शिखर "कुद्रेमुख (1892 मी॰) है [पुष्पगिरि, दक्षिणी सह्याद्रि का दूसरा सर्वोच्च शिखर पुष्पगिरि के पास से ही कावेरी नदी निकलती है। नीलगिरि पहाड़ी एक घुलनशील गाँठ है जहाँ पूर्वी घाटपर्वत एवं पश्चिमी घाट पर्वत आकर मिलते हैं।

– **नीलगिरि का सर्वोच्च शिखर** – डोडाबेट्टा (2623 मी॰) है जो दक्षिण भारत का दूसरा सर्वोच्च शिखर है। दक्षिण भारत का सर्वोच्च शिखर "अनाईमुडी (2695 मी॰) है। यह अन्नामलाई पर्वत की चोटी है। **Map-(4)** (भारत का प्रायद्वीपीय पठार)

<ग> पूर्वी घाट पर्वत → यह पर्वत श्रृंखला का विस्तार उड़ीसा से तमिलनाडु तक है। पश्चिमी घाटपर्वत की तुलना में इसका अधिक अपरदन हुआ है। अतः उसकी तुलना में यह कम ऊँचा है। नदी-अपरदन के कारण इसकी क्रमबद्धता भी लगभग समाप्त हो चुकी है। गोदावरी और कृष्णा जैसी नदियों ने इसे काटकर काफी चौड़ी घाटियों का विकास किया है। पूर्वी घाट पर्वत का सर्वोच्च शिखर विशाखापत्तनम् चोटी (1680 मीटर) है। इसका दूसरा सर्वोच्च शिखर महेन्द्रगिरि (1501 मीटर)

III – भारत का विशाल मैदान –

इस मैदान की अवस्थिति हिमालय पर्वत श्रेणी और प्रायद्वीपीय भारत के बीच है। हिमालय से निकलने वाली नदियों (जैसे- गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, कोसी आदि) तथा प्रायद्वीपीय भारत से आने वाली नदियों (यथा- सोन- चम्बल आदि) के द्वारा बहाकर लाये गये मिट्टी के जमा करते जाने से ही उपजाऊ मैदान का निर्माण हुआ है। उप-संरचनात्मक विशेषताओं एवं ढाल के आधार पर इस विशाल मैदान को हम निम्न भागों में बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है।

(क) सिंध का मैदान – यह मैदान सिन्धु नदी घाटी क्षेत्र में विस्तृत है। सिन्धु नदी के पश्चिम का मैदान मुख्यतः बांगर* से बना है। इसके पूर्व में स्थित मैदान उच्चावच की दृष्टि से विशिष्ट रूप से डेल्टाई है। इस भाग में नवीन जलोढ़ निक्षेपों की सतह पर पुराने नदी मार्गों के अवशेष पाए जाते हैं। ये लम्बे और सँकरे गर्तों के रूप में पाये जाते हैं जो "धोरोस" कहलाते हैं।

Note →* **बांगर** – [बाँगर प्रदेश का विस्तार मुख्यतः दो नदियों के बीच के भागों (दोआब क्षेत्र) में पाया जाता है। गंगा - यमुना का दोआब एवं सतलज का मैदान इसका उदाहरण है। (i) बारिन्द मैदान (ii) भूर क्षेत्र]

– सूखे नदी मार्गों के निकट असंख्य क्षारीय झीलें पायी जाती हैं, जिन्हें स्थानीय लोग "ढांड" कहते हैं।

<ख> पंजाब का मैदान – यह मैदान पंजाब और हरियाणा राज्यों में फैला है। यह मुख्यतः बाँगर से निर्मित है लेकिन नदियों के किनारे एक सँकरी पट्टी में खादर पायी जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में बेट कहा जाता है।

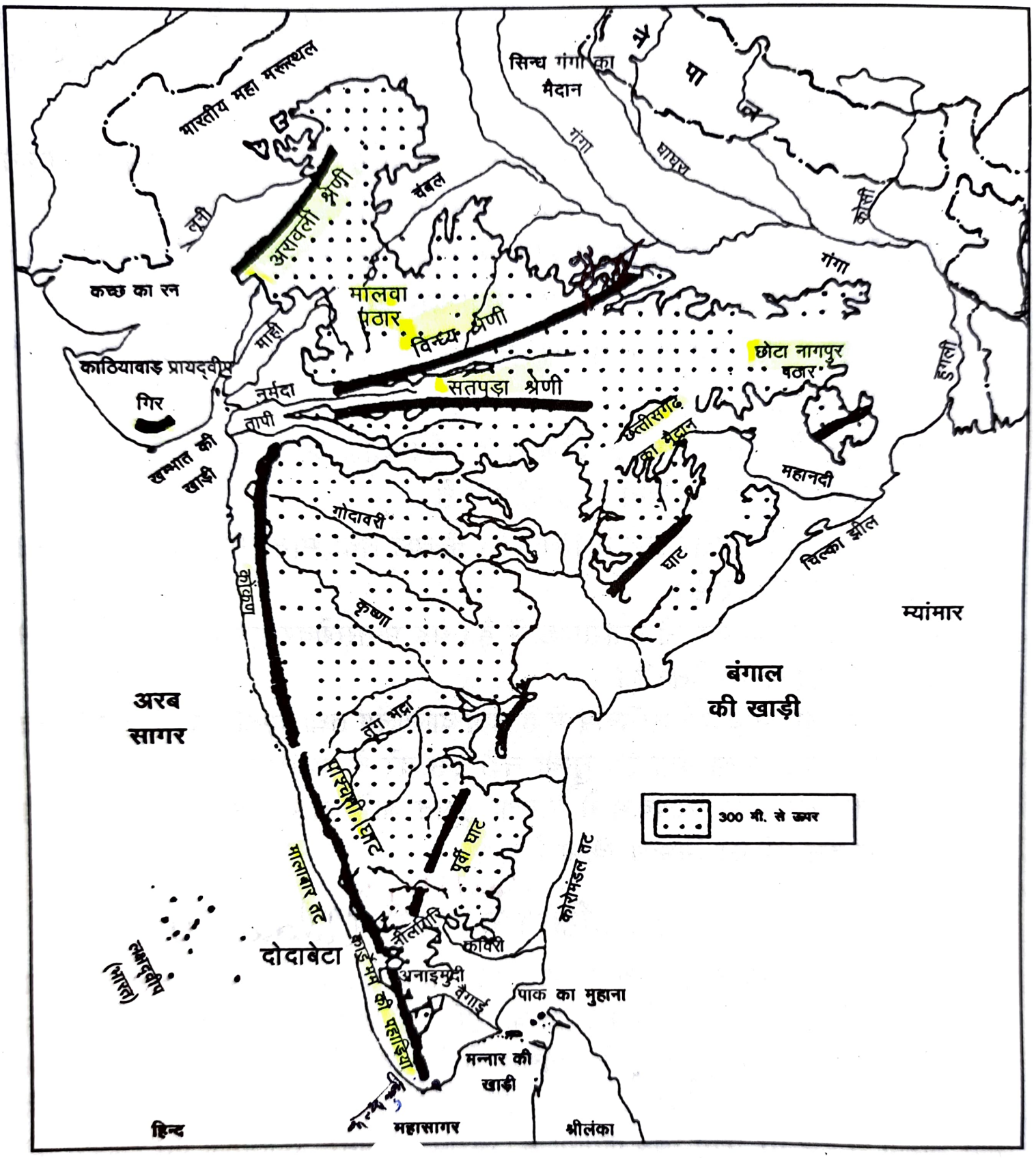

भारत का प्रायद्वीपीय पठार

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

इस मैदान के विशिष्ट लक्षण पंच-दोआब हैं जिनके विभिन्न नाम हैं। ⑦

(अ) बिस्त दोआब – व्यास एवं सतलज के बीच का दोआब क्षेत्र।
(ब) बारी दोआब – व्यास एवं रावी के बीच का दोआब क्षेत्र।
(स) रचना " – रावी और चिनाब नदियों के बीच का दोआब,
(द) छाज (चाज) दोआब – चिनाब एवं झेलम के बीच का दोआब,
(य) सिंध सागर दोआब – झेलम, चिनाब एवं सिंधु के बीच का दोआब क्षेत्र।

MAP ⑤ पंच-दोआब क्षेत्र

(ग) राजस्थान का मैदान →

इसका विस्तार अरावली के पश्चिम से लेकर भारत-पाकिस्तान की सीमा तक है। यहां की प्रमुख नदी लूनी है जो कच्छ की खाड़ी में विलीन हो जाती है। सांभर, डिडवाना, इस मैदान की प्रमुख नमकीन झीलें हैं। सांभर भारत की सबसे बड़ी अंत: स्थलीय (Inland) नमकीन झील है। इसका क्षेत्रफल लगभग 190 वर्ग Km है।

(घ) गंगा का मैदान → इस मैदान का विस्तार उत्तर प्रदेश, बिहार एवं पश्चिम बंगाल राज्यों में है। उत्तर प्रदेश में गंगा के ऊपरी मैदान को दो भागों में विभाजित करते हैं पश्चिमी भाग "रोहिलखंड का मैदान" कहलाता है जबकि पूर्वी भाग "अवध का मैदान" के नाम से जाना जाता है। गंगा नदी के उद्गम से अन्त तक इस मैदान को तीन भागों में बांटे हैं।-

(ङ) ब्रह्मपुत्र का मैदान → यह मैदान हिमालय पर्वत एवं मेघालय के पठार के बीच स्थित एक लम्बा एवं संकरा मैदान है। जैसा कि नाम से ही विदित है ब्रह्मपुत्र एवं कई सहायक नदियों के द्वारा इस मैदान का विकास हुआ है। ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में मिट्टी के जमाव के कारण कई द्वीपों का निर्माण हुआ है। ऐसा ही एक द्वीप "माजुली" है जो असम राज्य में है। यह विश्व का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है। नदी के कटाव के कारण वर्तमान में इस द्वीप का अस्तित्व खतरे में है।

IV- तटीय मैदान एवं द्वीप समूह -

तटीय मैदान का विस्तार भारत के प्रायद्वीपीय पर्वत-श्रेणी तथा समुद्र-तट के मध्य हुआ है। यहां जो मैदान बने हैं उनके निर्माण में समुद्री निक्षेप एवं नदियों के निक्षेप दोनों का योगदान है। तटीय मैदान को दो भागों में बांटा जा सकता है।

(i) पश्चिमी तटीय मैदान,
(ii) पूर्वी-तटीय मैदान, ||

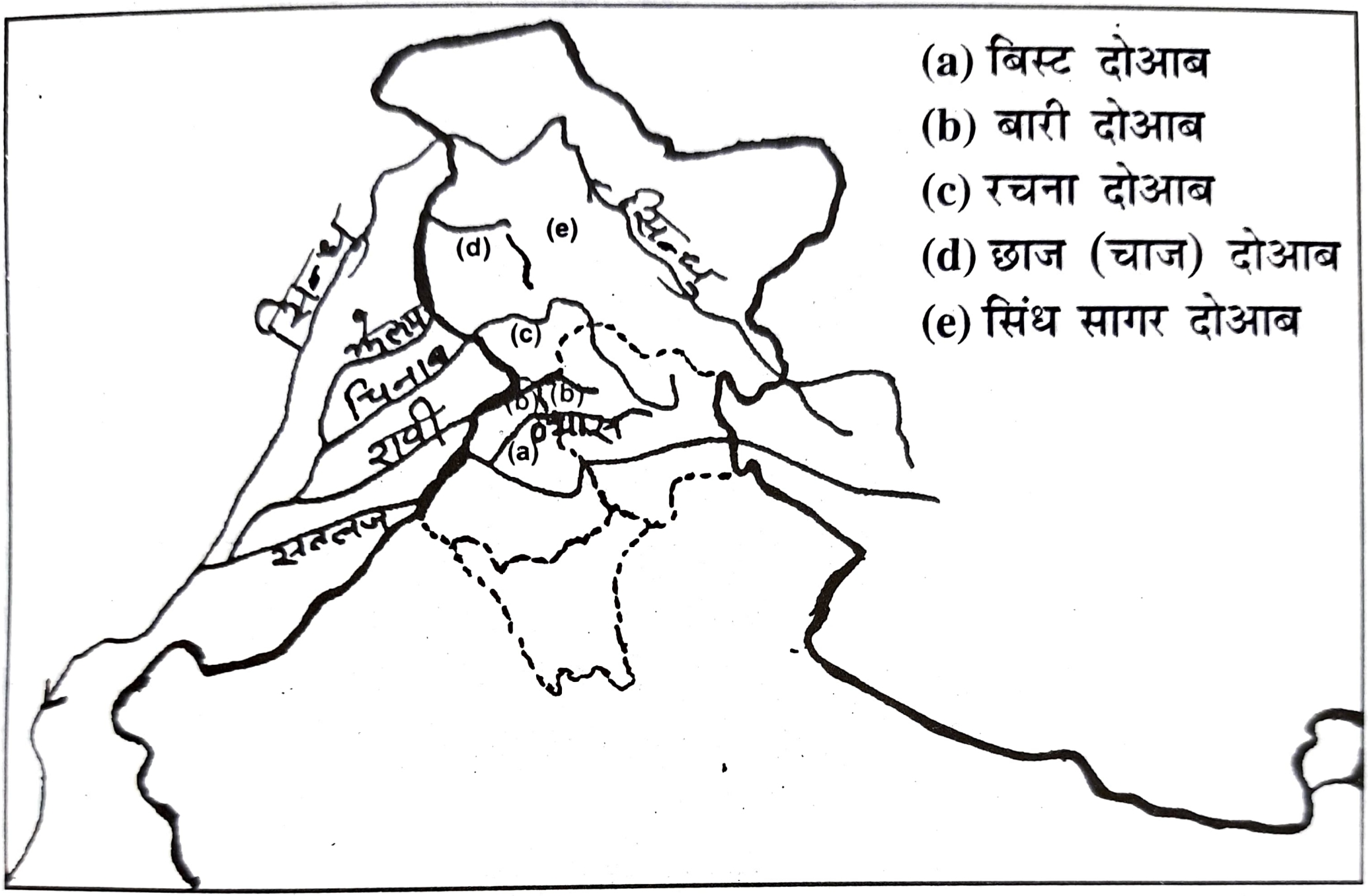

चित्र : पंच-दोआब क्षेत्र

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

(i) पश्चिमी तटीय मैदान —

पश्चिमी तटीय मैदान की अधिकतम चौड़ाई गुजरात में नर्मदा एवं तापी के मुहाने के करीब (80 Km) है। पश्चिमी तटीय मैदान में बहने वाली अधिकतर नदियाँ पश्चिमी घाट पर्वत की पश्चिमी ढाल से निकलती हैं। ये नदियाँ छोटी तथा तीव्रगामी हैं। अधिकतर नदियाँ मुहाने पर डेल्टा न बनाकर ज्वारनदमुख (एस्चुरी) का निर्माण करती हैं। पश्चिमी तट पर कुछ पश्चजल (Back Water) पाए जाते हैं जिन्हें केरल में **कयाल** कहते हैं। उदाहरण – कोम्बानाड एवं अष्टामुडी।

Note – पश्चजल (Back Waters) – यह एक प्रकार का लैगून है जिसका निर्माण नदियों के मुहाने पर बालू के जमाव के कारण बनता है। मालाबार तट पर (केरल में) इसे "**कयाल**" कहते हैं।

(ii) पूर्वी तटीय मैदान —

यह मैदान पूर्वी घाट एवं समुद्री तट के बीच स्वर्ण रेखा नदी से कन्याकुमारी तक फैला है।

पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की तुलना में अधिक चौड़ा है जिसका मुख्य कारण है, गोदावरी; कृष्णा एवं कावेरी जैसी नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण। पूर्वी तटीय मैदान में गोदावरी और कृष्णा नदियों के डेल्टाई भाग में कोलेरू झील की अवस्थिति है। यह एक डेल्टाई झील है। भारत के पूर्वी तट पर ही दो अन्य प्रमुख झीलें हैं। चिल्का झील (उड़ीसा में) एवं पुलीकट झील (आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु की सीमा पर स्थित है)। ये दोनों झीलें लैगून झील या अनूप झील के उदाहरण है। चिल्का भारत की सबसे बड़ी लैगून झील अथवा नमकीन झील (Salt Water lake) है। इसका क्षेत्रफल लगभग 3560 वर्ग Km है। उड़ीसा के मैदान को "उत्कल" का मैदान भी कहते हैं। तमिलनाडु का पूर्वी तट "कोरोमंडल तट" कहलाता है। जबकि गोदावरी और महानदी के बीच का पूर्वी तटीय मैदान "उत्तरी सरकार" के नाम से जाना जाता है।

द्वीप समूह → भारतीय द्वीप समूह को मोटे तौर पर हम दो भागों में बाँटते हैं।

(i) बंगाल की खाड़ी में स्थित अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह।

(ii) अरब सागर में केरल के तट से सटे लक्षद्वीप समूह,

(1) अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की सर्वोच्च चोटी सैडल चोटी (उत्तरी अण्डमान 738 मीटर) है एवं दूसरी सर्वोच्च चोटी माउंट थुलियर (ग्रेट निकोबार 642 मीटर) है।

• "इंदिरा प्वाइंट", भारत का सबसे दक्षिणी बिन्दु है तथा यह ग्रेट निकोबार में स्थित है।

प्रमुख द्वीप → (1) श्रीहरिकोटा → यह पुलीकट झील के अग्र भाग में अवस्थित है यह प्रवाल निर्मित द्वीप है।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN,PAKARI DAYAL"EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

Email.ID – gyan000005@gmail.comPhone No- 09430509798/9682491741

(ii) पम्बन द्वीप – यह मन्नार की खाड़ी में भारत और श्रीलंका के बीच स्थित है। यह आदम ब्रिज का भाग है।

(iii) न्यू मूर द्वीप – यह द्वीप बंगाल की खाड़ी में बंगलादेश तथा भारत की सीमा पर अवस्थित है। दोनों देशों के बीच इस पर अधिकार को लेकर विवाद बना हुआ है। गंगा के मुहाने पर गादों के निक्षेप से बना यह अति नवीन द्वीप है।